जाटी भाखा का विलाप

मेरी सैयल रे, साह आए थे मेरे घर।
मैं पेहेचान ना कर सकी, पिउ चले पुकार पुकार।। १ ।।

हे मेरी प्यारी सखी ! प्रीतम मेरे घर आए थे। मैं उनकी पहचान नहीं कर सकी और वह मुझे समझा समझा कर चले गए।

पिउ आए ना पेहेचाने, मोहे ना परी सुध।
वचन कहे जो हेत के, भांत भांत कई बिध।। २ ।।

धनी आए, मैंने उन्हें नहीं पहचाना कि वह मेरे धनी हैं। उन्होंने तरह-तरह से प्यार के वचन कहे।

नींद ऐसी भई निगोड़ी, ए तुम देखो रे सई।
दिन दो पोहोरे जागते, मोहे काली रैन भई।। ३ ।।

हे मेरी बहन ! देखो, इस बेहया नींद ने दिन के दोपहर के समय में घोर काली रात कर दी।

घर आए ना पेहेचाने, कहे विध विध के वचन।
कान आंखां फूटियां, और फूटे हिरदे के नैन।। ४ ।।

प्रीतम मेरे घर आए। मैंने पहचाना नहीं, उन्होंने तरह-तरह से समझाया। परन्तु मेरी आंखें, कान और अन्दर के नैन भी फूट गए और पहचान न सके।

सजन मेरा चल गया, अब रहूंगी विध किन।
वस्त गई जब हाथ थें, अब रोवना रात दिन।। ५ ।।

मेरे धनी चले गए, अब मैं कैसे रहूंगी ? मौका जब हाथ से चला गया तो अब रात-दिन रोना ही है।

मैं तो तब ना उठ सकी, पिउ चले बखत जिन।
क्यों खोऊं धनी अपना, जो तब पकड़ों चरन।। ६ ।।

पियाजी जिस समय धाम चले, मैं उस समय होश में आई नहीं वरन् उसी समय उनके चरण कमल पकड़ लेती और उन्हें नहीं छोड़ती।

जो मैं तबहीं जागती, तो क्यों जावे मेरा पिउ।
क्यों छोड़ों खसम को, संग पिउ के मेरा जिउ।। ७ ।।

उस समय यदि मैं जाग जाती तो मेरे प्रीतम जा नहीं सकते थे। मैं अपने वालाजी को कभी न छोड़ती। उनके साथ ही मेरा जीव भी जाता।

अब तरफ दसो दिस देखिए, तो गेहेरे मोह के जल।
मेर जैसी लेहेरां मिने, मांहें मछ गलागल।। ८ ।।

अब दसों दिशाओं में देखती हूं तो माया ही माया दिखाई पड़ती है। जिसमें पहाड़ जैसी बड़ी-बड़ी लहरें (माया के काम की चाहनाएं), बड़े-बड़े मगरमच्छ (सब सगे सम्बन्धी) जो खाने को तैयार बैठे हैं।

जल मांहें भमरियां, कई बिध तीखे तान।
कहूं सुख नहीं साइत का, ए दुख रूपी निदान।। ९ ।।

इस माया में बड़ी-बड़ी भंवरें (मुसीबतें) आ रही हैं। कई तरह के ताने सुनने पड़ रहे हैं। कहीं भी एक पल का भी चैन नहीं है। पूरा सागर दुःख से भरा है।

Nijanand App

एक घोर अंधेरी आंखां नहीं, और ठौर नहीं बुध मन।
विखम जल ऐसे मिने, पिउ आए मुझ कारन।। १० ।।

एक तो घोर अज्ञानता का भरा संसार है और दूसरी मैं नासमझ थी (आंखें नहीं थीं)। ऐसे भयंकर डरावने संसार में प्रीतम मेरे वास्ते आए थे।

मांहें भभूके आग के, खाना अमल जेहेर अति जोर।
पिउ पुकारे कई विध, मैं उठी ना अंग मरोर।। ११ ।।

इस संसार में बड़ी-बड़ी माया की चाहनाओं की अग्नि जल रही है। माया का ही जहरीला नशा खाना पड़ता है। इसमें से निकालने के लिए प्रीतम ने कई तरह से सावधान किया, पर मैं माया की खुमारी को दूर न कर सकी।

पिउ मेरा मुझ वास्ते, आए ऐसे में आप।
कई बिध जगाई मोहे, मैं कर ना सकी मिलाप।। १२ ।।

ऐसे संसार में मेरे प्रीतम मेरे वास्ते आए और उन्होंने कई तरह से मुझे जगाया। पर मैं उनसे मिल न सकी।

अब कहा करूं कहां जाऊं, टूट गई मेरी आस।
कहां वतन कौन बतावे, पिउ ना देखूं पास।। १३ ।।

अब क्या करूं? कहां जाऊं? मेरी आशा टूट गई है। अब घर कहां है, कौन बताएगा? बताने वाले प्रीतम मेरे पास नहीं हैं।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। १८२ ।।

पुकार चले मेरे पिउजी, मैं तो नींदई में उरझीए।
अब ढूंढे मेरा जीव रे, सो सजन अब कित पाइए।। १ ।।

मेरे प्रीतम पुकार-पुकार के चले गए। मैं माया की नींद में ही पड़ी रही। अब मेरा जीव प्रीतम को ढूंढता है, लेकिन अब वह कहां मिलें?

सई रे पिउ की बातें मैं कैसे कहूं, मोसों आए कियो मिलाप।
मेरे वास्ते माया मिने, क्यों कर डारया आप।। २ ।।

हे बहन ! मैं प्रीतम की बातें कैसे कहूं? वह माया के बीच में मेरे वास्ते आए और मुझे मिले।

आए वतन से पिउ अपना, देखाए के चले राह।
आधा गुन जो याद आवे, तो तबहीं उड़े अरवाह।। ३ ।।

प्रीतम घर से आए और घर का रास्ता बताकर चले गए। यदि उनकी थोड़ी भी कृपा याद आती तो तभी मेरा जीव निकल जाता।

साहेब चले वतन को, केहे केहे बोहोतक बोल।
धिक धिक पड़ो मेरे जीव को, जिन देख्या न आंखां खोल।। ४ ।।

बहुत वचन कहकर साहब (स्वामी) घर चले गए। धिक्कार है मेरे जीव को, जिसने आंखें खोलकर पहचानां नहीं।

Nijanand App